ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 132-136
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

समकालीन भारतीय अमूर्तकला में दिल्ली के अमूर्त कलाकारों का एक अध्ययन

1. अनिल सोनी
2. डॉ0 ईश्वर चंद गुप्ता

1. शोध अध्येता– धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़, डॉ. भीम राव अंबेडकर विश्वविद्यालय, 2. शोध निदेशक– प्रोफेसर, धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ (उ0प्र0), भारत

Received-24.08.2023, Revised-30.08.2023, Accepted-05.09.2023 E-mail: anilsnart15@gmail.com

सारांश: ***भारतीय अमूर्त कला ने उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में ही अपनी उपस्थिति दर्ज की और दुनिया भर में अपने पंख फैलाए, जबकि लोगों को विभिन्न कला रूपों से परिचित कराया जा रहा था। भारतीय अमूर्त कला ने वास्तव में सफलतापूर्वक अपना स्थान बनाया। अमूर्त कला क्या है, एक आंदोलन के रूप में अमूर्त कला प्रतिनिधित्वात्मक चित्रों की पारंपरिक सोच से अलग है। पेंटिंग की यह शैली गैर–आलंकारिक और गैर–प्रतिनिधित्वात्मक है, जो पेंटिंग मूर्तिकला और ग्राफिक कला को चित्रित करने के लिए आकार रूप रंग और बनावट जैसे अमूर्त तत्वों का उपयोग करती है। यह .श्य कला रूप विषय वस्तु और चित्रात्मक प्रतिनिधित्व से मुक्त है। अमूर्त कला का प्रयोग सदियों से चला रहा है, ऐसे में हम आज दिल्ली के कुछ प्रमुख कलाकारों के बारे में इस शोध पत्र के माध्यम से चर्चा करेंगे और जानेंगे कि भारत में अमूर्त कला का आयाम किस स्तर पर विकसित होना हो रहा है।***

कुंजीभूत शब्द– भारतीय अमूर्तकला, गैर–आलंकारिक, गैर–प्रतिनिधित्वात्मक, पेंटिंग मूर्तिकला, ग्राफिक कला, आयाम, आदान–प्रदान।

20वीं सदी की शुरुआत थी, जब आधुनिकतावाद ने भारत में अपने पैर फैलाये। यह विभिन्न यूरोपीय कलाकारों के संपर्क के परिणामस्वरूप हुआ। विचारों के आदान–प्रदान ने भारतीय आधुनिक और अमूर्त चित्रकारों को खुद को बेहतर ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए प्रयोग करने और अपनी अंतरात्मा की गहराई में जाने के लिए प्रेरित किया। अमूर्तता ने दिमाग पर एक विचार धारा या सिद्धांत के रूप में नहीं बल्कि अज्ञात सत्य को जानने के इरादे के रूप में शासन किया। यह अव्यक्त का अनुभव करने की इच्छा थी। अनेक चित्रकारों ने अपने प्रभाव से हटकर अभिव्यक्ति के अपने तरीकों की ओर सरल छलांग लगाई। परिणामस्वरूपए कई आधुनिकतावादी चित्रकारों ने कुछ सबसे आश्चर्यजनक अमूर्तताएं बनाईं। अमूर्त कला अतियथार्थवाद और घनवाद से अत्यधिक प्रभावित थी जो प्राकृतिक दुनिया की दृश्यता अनुकरण पर केंद्रित है। कलाकार अपने आप में गहराई से उतरते हैं और गैर.आलंकारिक कला का सचित्र प्रतिनिधित्व विकसित करते हैं कई भारतीय कलाकार आज ऑनलाइन कला दीर्घाओं में ऐसे कला रूपों की पेंटिंग ऑनलाइन बेचते हैं। अमूर्त अभिव्यक्तिवाद पेंटिंग बनाने की सहज स्वचालित और सहज विधि पर केंद्रित है। अमूर्त अभिव्यक्तिवाद भारतीय कला की स्वतंत्रता के बाद की अवधि में महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों में से एक बन गया। कई प्रतिष्ठित और नवोदित कलाकारों ने अमूर्तता को अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में चुना।

कलाकृतियों का अमूर्त रूप भारत की आधुनिक कला में उभरा और भारतीय कला की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कला का अमूर्त रूप दो तरीकों की ओर झुका हुआ है, एक है चित्रों में प्राकृतिक उपस्थिति की कमी और दूसरा है अमूर्त तत्वों की मदद से कला वस्तुओं का स्वायत्त प्रतिनिधित्व। एक अमूर्त कला आंदोलन एक कलाकार जो सोच रहा है उसे संचार और अभिव्यक्ति का एक तरीका है जिसे एक वस्तु के रूप में दर्शाया जाता है। तेजी से बदलती दुनिया में अमूर्त कला पेंटिंग और चित्र विचारों को व्यक्त करने का एक अनूठा तरीका है। अमूर्तन के रूप ने भारी लोकप्रियता हासिल की और राम कुमार रज़ा गायतोंडे पदमसी सबावाला और स्वामीनाथन सहित कई प्रतिष्ठित कलाकारों द्वारा इसे स्वीकार किया गया। पारंपरिक कला रूप में बाटिकए बंधनीए वर्ली और गोंड शामिल हैं। हालाँकिए अमूर्त कला ने दुनिया भर के लाखों कलाकारों और कला प्रेमियों का ध्यान आकर्षित किया और 20वीं सदी के पहले दो दशकों में अपने चरम पर पहुंच गई। कला के इस रूप ने पेंटिंग की विषय वस्तु या रूपांकन को चित्रित किए बिना शुद्ध चित्रों को उजागर किया। अमूर्त कला को ऐसी कला के रूप में जाना जा सकता है जो दृश्य वास्तविकता का सटीक चित्रण नहीं करती है बल्कि रंगए रूपए आकार और इशारों जैसे दृश्य संकेतों की एक श्रृंखला का उपयोग करके इसे चित्रित करने का प्रयास करती है।

शोभा ब्रूटा– 1943 में नई दिल्ली में एक कलात्मक परिवार में जन्मी जहां उन्हें कला में अध्ययन करने के लिए प्रेरणा मिली उन्होंने 1964 में कॉलेज ऑफ आर्ट्स नई दिल्ली से पेंटिंग में डिप्लोमा प्राप्त किया। अपने शुरुआती चरण में बरूटा जी ने विभिन्न शैलियों में काम किया और विभिन्न माध्यमों से जुड़ी रहीं। उन्होंने अपने दार्शनिक रूप से प्रस्तुत ध्यानपूर्ण कैनवस पर पहुंचने से पहले चित्र आलंकारिक और अमूर्त पेंटिंग बनाईं और प्रिंटमेकिंग में अमूर्त के साथ बड़े पैमाने पर प्रयोग किया। उनकी नक्क़ाशी और लकड़ियाँ रंग के साहसिक उपयोग और उसकी कल्पना के गूढ़ रहस्य को पकड़ने के लिए एक अमूर्त कल्पना के शुरुआती प्रयासों को दर्शाती हैं।

ब्रूटा जी ने तब से अपनी कला को ध्यान के रूप में विकसित किया है, क्योंकि उनका मानना है कि खाली कैनवास को साफ और सुव्यवस्थित दिमाग से देखा जाना चाहिए। उनकी हाल की कुछ प्रदर्शनियाँए– पाथ बियॉन्ड एज ऑफ इन्फिनिटी सॉन्ग ऑफ द डिवाइन म्यूजिक ऑफ द स्फेयर्स में कलाकार की अपनी शैली की गहरी खोज को दर्शाती हैं और तेजी से माध्यमों का प्रदर्शन करती हैं। ब्रूटा जी ने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं में अपने कार्यों का प्रदर्शन किया है, और भारत सरकार के संस्.ति मंत्रालय की महत्वपूर्ण फ़ेलोशिप प्राप्त की है। उन्हें 1982 में अखिल भारतीय ललित कला और शिल्प सोसायटी पुरस्कार और 1986 में साहित्य कला परिषद से एक और पुरस्कार मिला। वह नई दिल्ली में रहती हैं और काम करती हैं।

मुझे लगता है कि समाज को अभिव्यक्ति के एक माध्यम के रूप में कला का सम्मान करने समझने और सराहना करने की

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

आवश्यकता है, जो इसके सौंदर्य विकास में योगदान देता है। एक कलाकार समाज को जीवन के बेहतर पहलुओं को देखने में मदद करता है। एक कलाकार अपने अद्वितीय सौंदर्य योगदान से समाज को समृद्ध करता है। इसलिए वह उम्मीद करती है, समाज को उसकी रचनात्मक इच्छा को पूरा करने के लिए पर्याप्त सहायता प्रदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

समाज को एक कलाकार से अपने काम की व्याख्या करने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उसकी भाषा दृश्य है। एक कलाकार की एक अजीब भाषाए उसकी अपनी धारणा और जीवन में अनुभवों के प्रति अनूठी प्रतिक्रिया होती है। मैं उम्मीद करता हूँ कि समाज एक कलाकार को उसकी सोच के लिए सम्मान देगा उसकी अभिव्यक्ति के लिए उसकी सराहना करेगा क्योंकि वह अपनी धारणा को अपनी भाषा में अनुवाद कर रहा है। मैं उम्मीद करता हूँ कि समाज एक कलाकार की नवीन अभिव्यक्तियों के प्रति सहिष्णु और संवेदनशील हो।

कलाकृतियों का निर्माण अनादि काल से चिंता का विषय रहा है और यह जारी रहना चाहिए। दिल्ली में त्रिवेणी कला संगम की शिक्षिका और कलात्मक परंपराओं से समृद्ध परिवार से आने वाली शोभा ब्रूटा भारत के सबसे सुस्थापित समकालीन कलाकारों में से एक हैं। उनके पति रामेश्वर ब्रूटा कलाकार हैं और उनकी बेटी पूजा इरन्ना और उनके पति जीआर इरन्ना भी कलाकार हैं।

एक पूर्ण अभिव्यंजक और कलात्मक अवधारणा की अपनी लंबी खोज में शोभा ब्रूटा अपने विषय मीडिया और शैली में कई बदलावों से गुज़री हैं और उनका अनुभव किया है। उन्होंने विभिन्न चीज़ों को चित्रित किया है, जिनमें पुरुषों और महिलाओं के चित्रए अधिक अमूर्त मानव रूपए पक्षियोंए जानवरों और कीड़ों के रूप और साथ ही प्रकृति के विभिन्न तत्व अर्थात् पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि शामिल हैं। कला समीक्षक केशव मलिक उनकी कृतियों और उनके हालिया शो म्यूजिक ऑफ द स्फीयर्सश् के बारे में कहते हैं कि शोभा के काम चाहे वे किसी भी माध्यम में हों खुले तौर पर पवित्रता का दावा नहीं करते हैं। बिल्कुल नहीं, बल्कि वे समझने और समझने का उनका प्रयास हैं।

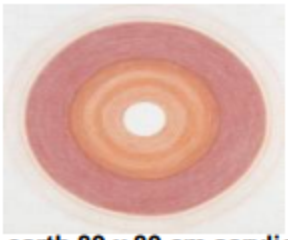

Round the earth 89 x 89 cm acrylic on canvas

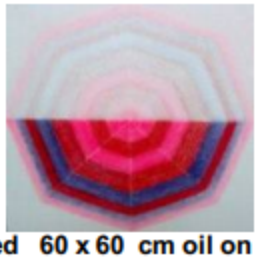

Untitled 60 x 60 cm oil on canvas

हेमराज– 1968 में दिल्ली में जन्मे और दिल्ली में ही रहने वाले प्रसिद्ध भारतीय कलाकार हेमराज ने अपनी मातृ संस्था द कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली का गौरव बढ़ाया है उन्होंने वहां से चित्रकला में स्नातक और स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की है। क्रमशः 1991 और 1993 के वर्ष में। उन्हें भारत के विभिन्न स्थानों में एकल शो और कई समूह प्रदर्शनियों की श्रृंखला का श्रेय प्राप्त है। भारतीय अमूर्त कलाकार ने अमेरिका में बिल लोव गैलरी जर्मनी में गैलेरिया मुलर और प्लेट आदि जैसे प्रतिष्ठित स्थानों में अपना काम प्रदर्शित किया है। कलाकार हेम राज को देश के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों में से एक से सम्मानित किया गया है, जो कोई और नहीं बल्कि है ललित कला अकादमी से राष्ट्रीय पुरस्कार है।

इस विनम्र आत्मा की टोपी में कुछ और भी गौरवशाली पंख शामिल हैं, जिसमें उनका काम इंडिया आर्ट फेयर 2014 में एक एकल बूथ में प्रदर्शित किया गया था। यह पहला अवसर था, जब अमूर्तता के साथ काम करने वाले एक समकालीन भारतीय कलाकार ने एकल परियोजना के रूप में प्रदर्शन किया था। हेम राज के जीवन और कार्य को कई फिल्मों में भी प्रलेखित किया गया है। इस समकालीन भारतीय कलाकार की कृतियाँ आपको देखने के लिए प्रेरित करती हैं मन को स्थिर होने के लिए।

भारतीय समकालीन कला में जो कृतियाँ किसी को शांति के लिए बाध्य करती हैं, उन्हें स्पष्ट रूप से हमें बुद्धि के विघटन की ओर प्रेरित करने वाली चीज़ के रूप में देखा जा सकता है। किसी को स्वाभाविक रूप से अर्थ खोजने की कोशिश न करने पर कभी कभी वाचाल इकाई को शांतिपूर्ण पड़ाव पर निलंबित करने के लिए प्रेरित किया जाएगा। क्या यह उन दिशाओं में से एक नहीं होगा जिसे कला संचालित कर सकती है। मन से परे क्षेत्र में प्रवेश पाने के लिए स्पष्ट रूप से अनिर्वचनीय जहां उनके कार्य हमें ले जाते हैं। कलाकार खुद इस पर विचार करता है, अगर उसे कभी लगा कि वह शांत मुखर नकारात्मकता के साथ कोई संदेश देना चाहता है। यदि कला को शब्दों के माध्यम से कुछ बताना होता तो साम्य का सार खो जाता।

भारतीय आर्ट गैलरी के भीतर उनके प्रभाववादी इम्पैस्टो लैट बोल्ड स्ट्रोक एक के ऊपर एक अपनी बात कहने की मांग करने वाली पंक्तियाँ जानबूझकर बेतरतीब ढंग से मोटे बिंदुओं के साथ खेल रही हैं। क्या कुछ पारभासी और कुछ अपारदर्शी निचली परतों के ऊपर अपारदर्शी उत्सर्जन उस प्रतिष्ठित रहस्य की झलक की फुसफुसाहट करते हैं, जो कभी–कभी आंशिक रूप से दिखाई देती है और फिर से छिप जाती है, जो हमें इसकी हमेशा मायावी गुणवत्ता की ओर ले जाती है क्या वह परिचित लगता है। जीवन का स्वभाव यह उतना ही करीब है, जितना एक कलाकार प्राप्त कर सकता है। उस अपारदर्शिता की उन परतों को उजागर करने के लिए जिसे वह जानबूझकर चुनते है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

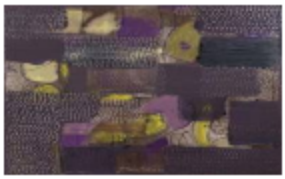

Eternal reminiscence- 2, 36 x36 inch ,oil on canvas,

Eternal reminiscence- 1 48 x 36 inch oil on canvas

मोना राय– मोना राय का जन्म 1947 में दिल्ली में हुआ था। राय ने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम. ए. मनोविज्ञान की पढ़ाई की और त्रिवेणी कला संगम में कुछ वर्षों तक कला कक्षाओं में भाग लिया। राय एक भारतीय युद्धोपरांत और समकालीन कलाकार हैं, जो विभिन्न सामग्रियों की अभिव्यंजक क्षमता की खोज करती हैं। वह रंगों के झिलमिलाते क्षेत्र बनाती है जो प्रकाश में चकाचौंध और दोलन करते हैं शिल्प उत्पादन और अनुष्ठान कला रूपों द्वारा सूचित अमूर्तताएं उनकी आकर्षक चौकोर कृतियाँ उनके कलात्मक दृष्टिकोण का प्रतीक हैं।

बिंदु, डैश, स्लैश, दिशात्मक स्ट्रोक और धारियाँ उसकी विशेष शैली बनाते हैं। आलंकारिक या कथात्मक कला में वर्गाकार कैनवस का उपयोग शायद ही कभी किया जाता है, क्योंकि नाटकीय विकृतियों को समायोजित करना कठिन होता है। हालाँकिए वही प्रारूप अमूर्त कला के संबंध में अधिक व्यवहार्य लगता है, जहाँ अनुपात और परिप्रेक्ष्य की समस्याएँ उत्पन्न नहीं होती हैं।

राय मूल रूप से छोटे प्रारूपों में वर्गाकार आकारों पर निर्भर करती है कभी–कभी बड़े आयताकार कैनवस पर भी निर्भर करती है। मोना राय के कैनवस में तनाव और प्रयास की गुणवत्ता वास्तव में दिलचस्प है। अपने अनूठे तरीकों के लिए जानी जाने वाली राय अक्सर अपने कैनवस को फाड़ देती हैं काट देती हैं या जला देती हैं और कभी–कभी अपने फ्रेम को सिलने के लिए मोची की मदद भी लेती हैं। कलाकार को वास्तव में कैनवास पर रंग उछालने के अनुभव को महसूस करने की आवश्यकता है। वह अपने काम को और अधिक खुलता हुआ देख सकती है। शांति और क्रांति के द्वंद्व जो हमारे ग्रह को नियंत्रित करते हैं उनके काम में जगह पाते हैं। उनका काम ज्यादातर खुले स्थान प्रकाश और समय के ब्रह्मांडीय रहस्य से संबंधित है जो अमूर्त है और इसे आसानी से बॉक्सिंग या कंपार्टमेंटलाइज़श् नहीं किया जा सकता है उनकी आकर्षक चौकोर कृतियाँ उनके कलात्मक दृष्टिकोण का प्रतीक हैं। बनावट राय को आकर्षित करती है।

राय मूल रूप से छोटे प्रारूपों में वर्गाकार आकारों पर निर्भर करती हैए कभी–कभी बड़े आयताकार कैनवस पर भी निर्भर करती है। मोना राय के कैनवस में तनाव और प्रयास की गुणवत्ता वास्तव में दिलचस्प है। रंग की मांग से एकी.त होकर जो पहली बार यादृच्छिकता प्रतीत होती है उसे लगातार दोहराने से स्थिरता और शांति का एहसास होता है। उन्हें यह कहते हुए उद्धृत किया गया है। मुझे वास्तव में कैनवास पर पेंट फेंकने के अनुभव को महसूस करने की ज़रूरत है। मैं अपने काम को और अधिक खुलते हुए देख सकती हूं। उनका काम गहरी चिंतनशीलता भी जगाता है।

समय और प्रकाश से जुड़े दो रूपक उनके कार्यों में दो स्थिर रूप हैं। शांति और क्रांति के द्वंद्व जो हमारे ग्रह को नियंत्रित करते हैं उनके काम में जगह पाते हैं। उनका काम ज्यादातर खुले स्थानए प्रकाश और समय के ब्रह्मांडीय रहस्य से संबंधित है। अपने लंबे और प्रतिष्ठित करियर के दौरानए उन्होंने कई एकल और समूह शो किए हैं। उनके हालिया समूह शो में गैलरी एस्पेसए नई दिल्ली 2000 में 'पेपर पल्पश् शामिल है। इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली, 2000 में महिला कलाकारों की एक कार्यशाला धातु की चमक पैलेट आर्ट गैलरी, दिल्ली 2002, इंडिया हैबिटेट सेंटर नई दिल्ली 2003 में अप्पाराव गैलरीजए चेन्नई द्वारा परफॉर्मेटिव टेक्सचर्स। उनके काम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रदर्शित किया गया है और कई प्रतिष्ठित संग्रहों जैसे नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्टए नई दिल्ली में प्रदर्शित किया गया है ललित कला अकादमीय एयर इंडियाय भारत भवनए भोपालए पंजाब विश्वविद्यालय संग्रहालय, चंडीगढ़ और भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अन्य निजी संग्रह में संग्रहित हैं।

Kaal 176 x 203 cm mix medium

shradha 192 x203 mix medium

गोपी गजवानी– जन्म 1938 सिंध भारत में नई दिल्ली भारत के एक चित्रकार, फोटोग्राफर, डिजाइनर, और कार्टूनिस्ट हैं। उन्होंने 1959 में दिल्ली स्कूल ऑफ आर्ट से ग्राफिक डिजाइनिंग में डिग्री के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की। गजवानी ने दिल्ली कॉलेज ऑफ आट्र्स से कला में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वह उनतीस वर्षों तक अमेरिकन सेंटर में एक डिजाइनर के रुप में कार्यरत थे उन्होंने घरेलू और विदेशी दोनों तरह के नाटकों फिल्मों, नृत्यों और कार्यशालाओं के लिए पोस्टर बनाए। उन्होंने एक चित्रकार के रूप में काम करने के अलावा पत्रिका स्पैन और अन्य प्रकाशनों में कार्टून और कैरिकेचर का योगदान दिया। गजवानी ने कई कॉफ़ी टेबल बुक्स डिज़ाइन कीं जिनमें से कुछ उनकी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

अपनी तस्वीरों के साथ थीं। उन्होंने 1973 से 2014 तक प्रयोगात्मक लघु फिल्में बनाते हुए एक फिल्म निर्माता के रूप में भी काम किया। टाइम 1973 और द एंड 1974 सहित उनकी लघु फिल्में ललित कला अकादमी के आर्ट इन सिनेमा कार्यक्रम में दिखाई गईं।

एक चित्रकार के रूप मेंए गजवानी ने नई दिल्ली में श्रीधरानी आर्ट गैलरी में कई वन–मैन शो किए। उन्होंने नई दिल्ली और मुंबई के साथ–साथ भारत के बाहर के देशों में सौ से अधिक समूह शो में भी भाग लिया।

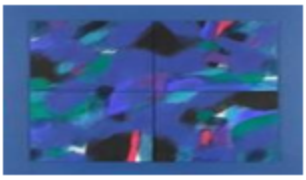

Untitled 29 x 29 inch acrylic on canvas

untitled 38 x 36 inch acrylic on canvas

कालीचरण गुप्ता– कालीचरण गुप्ता का जन्म हरियाणा में हुआ था। उन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया एंड कॉलेज ऑफ आर्टए नई दिल्ली और कानपुर विश्वविद्यालय से पढ़ाई की है। कैनवस को देखने से हमें एहसास होता है कि कालीचरण हमें पर्यावरण के मुद्दों बारीक रेखाओं और रंग क्षेत्रों और गहरे और हल्के स्वरों को कभी–कभी डरावनी तरीके से प्रस्तुत करने का एक दृश्य वर्णन दे रहा है, जो ग्लोबल वार्मिंग और ग्रह पर मनुष्य के प्रभाव की वर्तमान दर के बारे में विचारों को जन्म देता है। धरती अपनी फ्रॉम द विंडो श्रृंखला के साथ ऐसा लगता है जैसे उन्होंने आकाश और उस दृश्य को चित्रित किया है जो अराजक भ्रम में परिलक्षित होता है। करीब से जांच करने से पता चलता है कि हम कई चीजों के बारे में सोच सकते हैं। यह दूरी पर एक कारखाना हो सकता है, जो धुआं निकालता है, जबकि अग्रभूमि में अनंत विवरणों का एक धुआं हमें आकर्षित करता है और हम कल्पना कर सकते हैं कि इसे एक बंधे हुए गौरैया द्वारा देखा जा रहा है जो एक सूखे पर आराम कर रहा है। उनकी सेलिब्रेशन श्रृंखला हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि कम से कम गुफा चित्रों के निर्माण के बाद से मनुष्य अपने अस्तित्व और अनुभवों को कैसे दर्ज कर रहे हैं। अनुष्ठानों के माध्यम से सुशोभित और पीढ़ियों से आगे बढ़ते हुए मिथकों और कहानियों ने विश्वासों का निर्माण किया है और सांसारिकता से मुक्ति प्रदान की है। कहानी का माध्यम सहानुभूति को बढ़ाता है और दृश्य कथा के माध्यम से दर्शकों को अविश्वास को निलंबित करने का अवसर देते हुए रेचन पैदा करता है।

कालीचरण की सेलिब्रेशन श्रृंखला हमें द्वंद्व प्रदान करती है। यहां अमूर्तताएं हैं जो अनुभव से पैदा हुई हैं, और प्रत्येक कैनवास में कलाकार हमें उत्पत्ति की विभिन्न कहानियों के बारे में बता रहा है। अस्तित्व के अर्थ के साथ प्रदर्शित प्रश्नों के उत्तर दे रहा है। काली चरण की रचनाएँ हमें पर्यावरण के मुद्दों से निपटने का एक दृश्य विवरण देती हैं। रंगों के ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज शहरीकरण को दर्शाते हैं, गहरे और हल्के स्वर ग्लोबल वार्मिंग के विचारों को जन्म देते हैं। कैनवास के खाली हिस्से हरे क्षेत्र या यहां तक कि बेकार स्थान भी हो सकते हैं जिन पर अतिक्रमण किया जा रहा है। भीड़–भाड़ वाले वातावरण में रहते हुए भी कोई मानव जाति का आनंद ले सकता है जैसा कि चमकीले जीवंत रंगों में देखा जाता है और साथ ही अराजकता और भ्रम पर निराशा भी होती है जैसा कि गहरे रंगों में देखा जाता है। उनके चित्रों में जितनी करुणा और पीड़ा हैए उतनी ही हमारे दिलों में मासूमियत और दर्द भी है लेकिन अब जागने और हमारी दुनिया को बचाने के लिए कार्य करने का समय है।

Untitled kcgo3 22x15 inch acrylic on canvas

Man of great enlightenment 33x36 inch acrylic on canvas

निष्कर्ष– शोध पत्र के निष्कर्ष में यह बात सामने निकलकर आती है कि कला अभिव्यक्ति की कोई भी सीमा प्रतिबन्धित न होकर स्वच्छंद है, परन्तु उसमें भी अपने समय काल में चल रही परिस्थिति एवं विचार का संतुलन होना चाहिए, मूर्त हो या अमूर्त कला अभिव्यक्ति उसमें कलाकार की मौलिकता होनी चाहिए। वर्तमान में कला जगत में बहुत सारे शोध हो रहे हैं जिसमें कलाकार नयी–नयी तकनीकों के प्रयोग करने की कोशिश करता और अपनी नयी पहचान बनाने में सफल होता। कलाकार चाहे एक ही परिवेष में भले ही क्यों न हो उसकी अभिव्यक्ति अलग–अलग हो सकती है। ऐसा ही उदाहरण इस शोध पत्र में दिल्ली के कलाकारों के कुछ कला अभिव्यक्ति के माध्यम से मैं सामने रखने की कोशिश की है। वर्तमान समय में चल रहे कलज्ञ अभिव्यक्ति में नित्य नए प्रयोग किये जा रहे हैं। आज दिल्ली में हजारों की संख्या में कलाकार है, जिसमें अमूर्त कला करने वालों की भी संख्या बहुत ज्यादा ऐसे में कुछ प्रमुख कलाकारों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://naturemorte.com/artists/monarai/
2. https://naturemorte.com/artists/monarai/

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

3. https://www.artmajeur.com/hem-raj
4. https://dagworld.com/shobhabroota.html
5. https://www.saatchiart.com/kalicharangupta
6. https://en.wikipedia.org › wiki › Gopi_Gajwani
7. www.patrika.com
8. singh63.blogspot.com
9. samalochan.blogspot.com

*****